संघर्ष में चमकती प्रतिभा- वीरम

किसी ने सच ही कहा है कि यदि हौंसला हो तो व्यक्ति आसमान भी छू सकता है। ऐसे ही बुलंद हौंसले वाला, नीली आंखों, सांवला रंग व साधारण लंबाई वाला बालक है **वीरम बागरिया**।राजकीय उ. मा. विद्यालय पूठोली में कक्षा 9 में पढ़ने वाला यह छात्र एक अत्यन्त गरीब परिवार का बालक है।

परिवार - वीरम के एक भाई और तीन बहने हैं। भाई पांचवी कक्षा में पढ़ता है लेकिन तीनों बहनें अनपढ़ हैं। वीरम के बार बार कहने के बावजूद उसके पिता ने बहनों को पढ़ाने से मना कर दिया। उसके पिता की इच्छा है कि उनके दोनों बेटे पढ़ लिखकर काबिल बने।

इनकी आजीविका का मुख्य साधन है खजूर के झाड़ू बनाना।वीरम खुद भी यह काम बहुत अच्छे से कर लेता है।कईं बारतीनों बहनें गांव की बस्ती से खाना मांगकर लाती है तो सभी खाना खा पाते हैं।घर पर नल व बिजली की कोई सुविधा नहीं है। पीने का पानी ये विद्यालय के नल से भर कर ले जाते हैं।

प्रतिभा- विपरित परिस्थितियों के बावजूद वीरम एक प्रतिभाशाली छात्र है। कक्षा आठ में व नवमीं में अभी तक उसका प्रदर्शन अच्छा रहा है खासकर अंग्रेजी में इसकी विशेष रूचि है और अंक भी अच्छे प्राप्त किए हैं।वीरम कक्षा में हमेशा प्रश्न पूछने के लिए तत्पर रहता है। इस वर्ष वीरम राज्य स्तर पर क्रिकेट प्रतियोगिता में खेलकर आया है।

समय समय पर विद्यालय इसकी मदद के लिए तत्पर रहता है।ऐसे बच्चों को आगे बढ़ाने में शिक्षा संबल कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है।